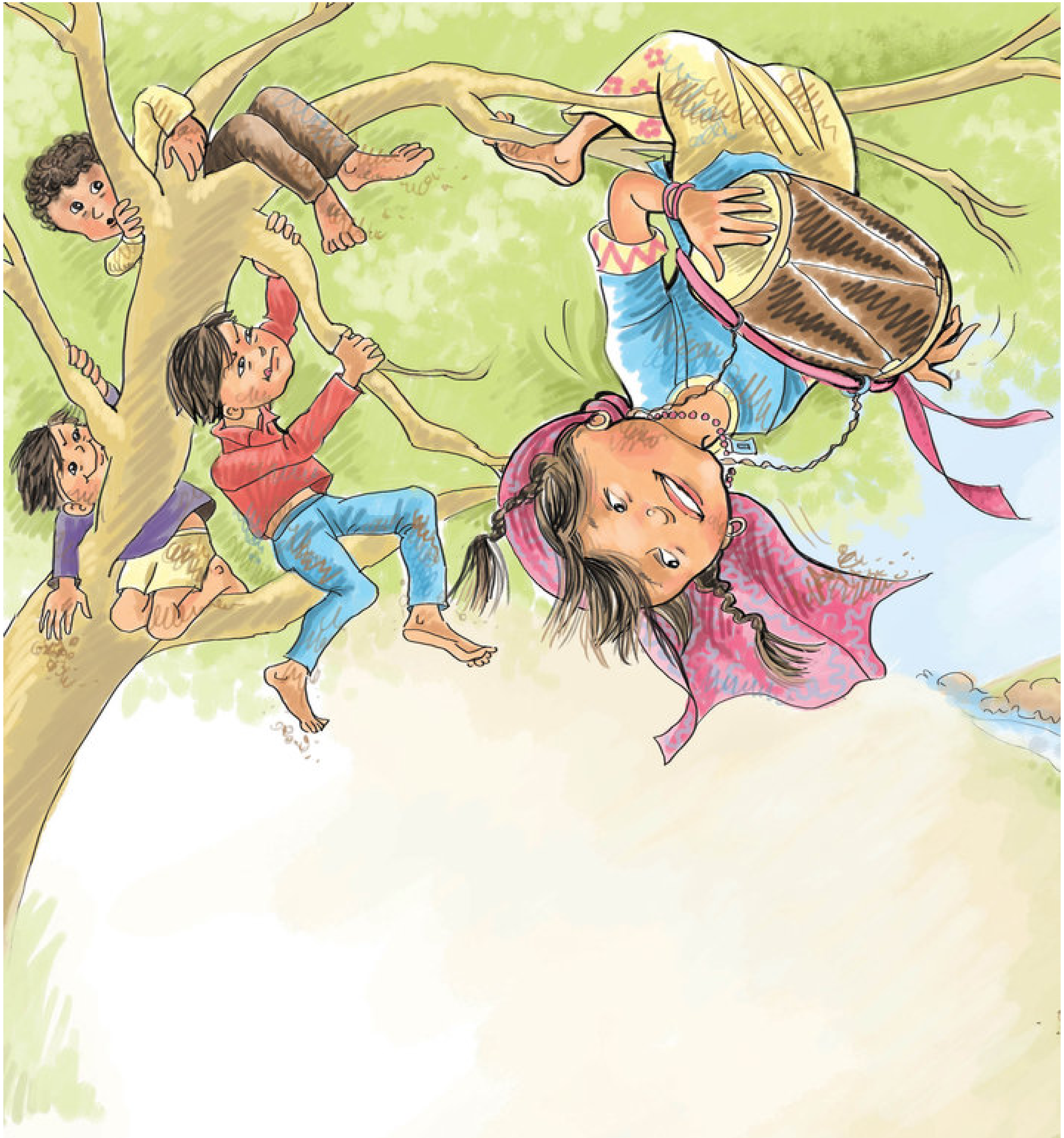


PRATHAM BOOKS

पठन स्तर ४

# चिपको चिपको वृक्ष बचाओ

**Author:** Jeyanthi Manokaran
**Illustrator:** Jeyanthi Manokaran
**Translator:** Rishi Mathur



***धूम धड़ाका! धूम धड़ाका!***
***धूम धड़ाका! धूम!***

अनगिनत भेड़ें उसके पसंदीदा मोहिन के पेड़ के इर्द-गिर्द मिमिया रही थीं, जबकि दिची उसी पेड़ की काफ़ी ऊँचाई वाली एक डाल पर घुटनों के बल लटकी झूल रही थी। उससे होड़ लगाने वाले उसके तीनों भाई चौड़े तने वाले उसी पेड़ पर चढ़ने में जुटे थे।

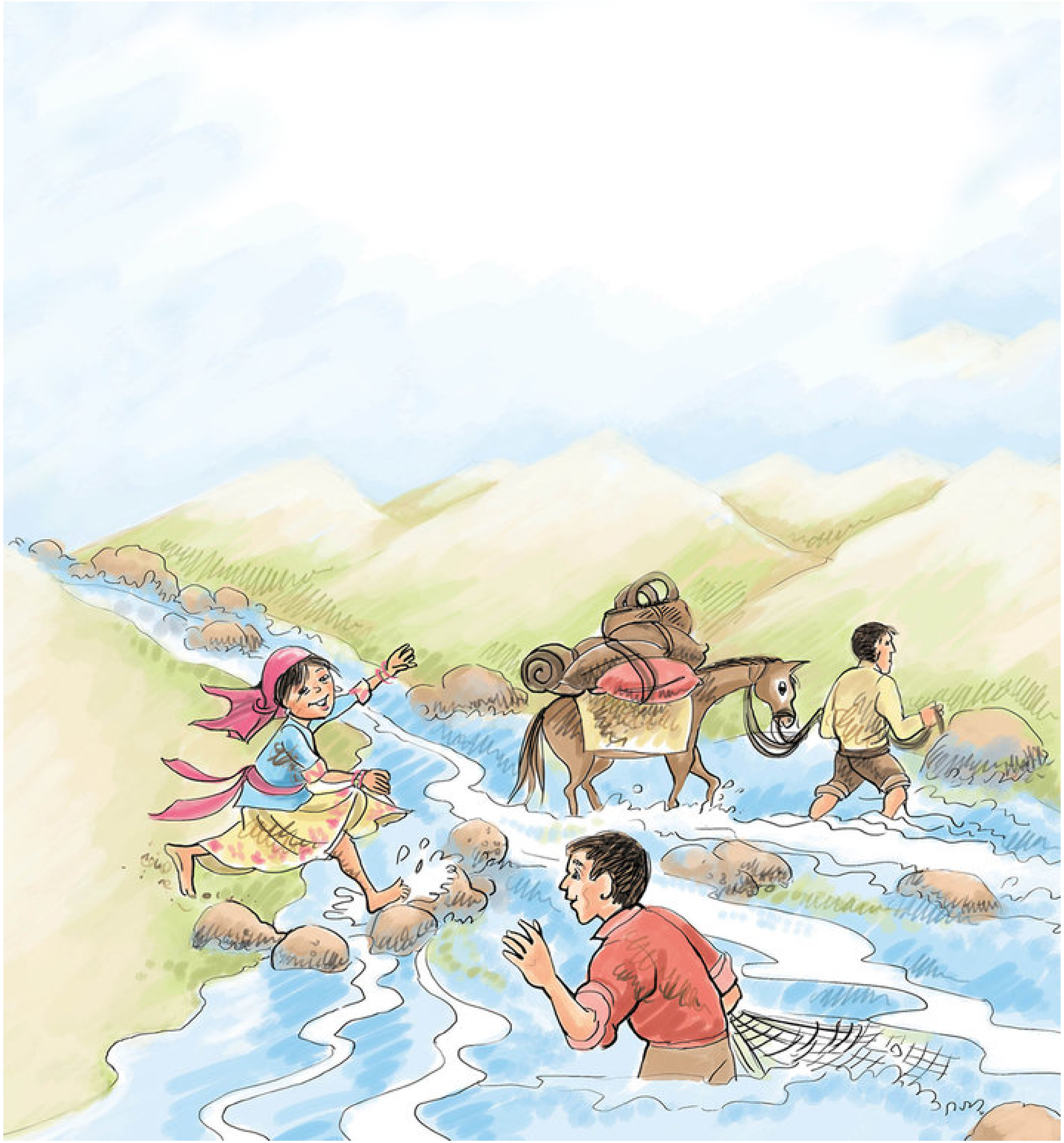
“दिची!” चीड़, बाँज, देवदार और मोहिन के पेड़ों के जंगल में गूँज उठी दादा यानी उसके पिता की पुकार। “आई दादा!” दिची ने ढलान के नीचे एक झाड़ी पर ढोलक को फेंका और ख़ुद चट्टानों पर फिसलते हुए वहाँ जा पहुँची।

“चल मेरे साथ दादी अम्मा के घर नदिया के पार। खच्चर पर लदा है उनके काम का ढेर सारा सामान। चल आ जा मेरे साथ। भेड़ों को हाँक कर सही-सलामत घर पहुँचा देना, बच्चों।”

“हमें अपने साथ नहीं ले चलेंगे क्या?” श्याम ने रूठते हुए कहा।

“अगली बार,” दादा ने सख़्ती से कहा, “दादी अम्मा की तबीयत आजकल बहुत ख़राब है। दिची कुछ दिन वहीं रहेगी। पहले की तरह सेहतमंद होने तक उनकी देखभाल करेगी।”





दादा ने खच्चर की रास पकड़ कर उसे नदिया की घुटनों तक गहरी धारा पार कराई। दिची ने अपना घाघरा हाथ से ऊपर उठाकर समेट लिया, ताकि वह आसानी से चट्टानों पर कूद-कूद कर धारा पार कर सके। बर्फ़ीले ठंडे पानी में पैर पड़ने से उसके पंजों में सनसनी हो रही थी। तभी उसका पाँव फिसला और वह छपाक से पानी में गिर गई।

“सँभल के!” पास ही मछली पकड़ रहे उसके चाचा ने होशियार किया।

तभी अचानक नदिया में पानी का सैलाब आ गया। देखते ही देखते नदिया गरजने-उफनने लगी, और वे सब भयानक बाढ़ में फँस गए। चाचा दिची की बाँह पकड़ने के लिए लपके।

उसका बायाँ पैर बहाव के साथ लुढ़कते हुए आई चट्टान के नीचे फँस गया। नदी के उफान में दादा बस धुँधले से नज़र आ रहे थे, और उनकी आवाज़ भी पानी के शोर में दब गई थी। तेज़ बहाव में फँस कर खच्चर किसी तरह पैर जमाने की कोशिश करते और तैरते हुए दूसरे किनारे तक पहुँचा, जबकि उस पर लदा सारा सामान पानी में गिर कर बह गया था।

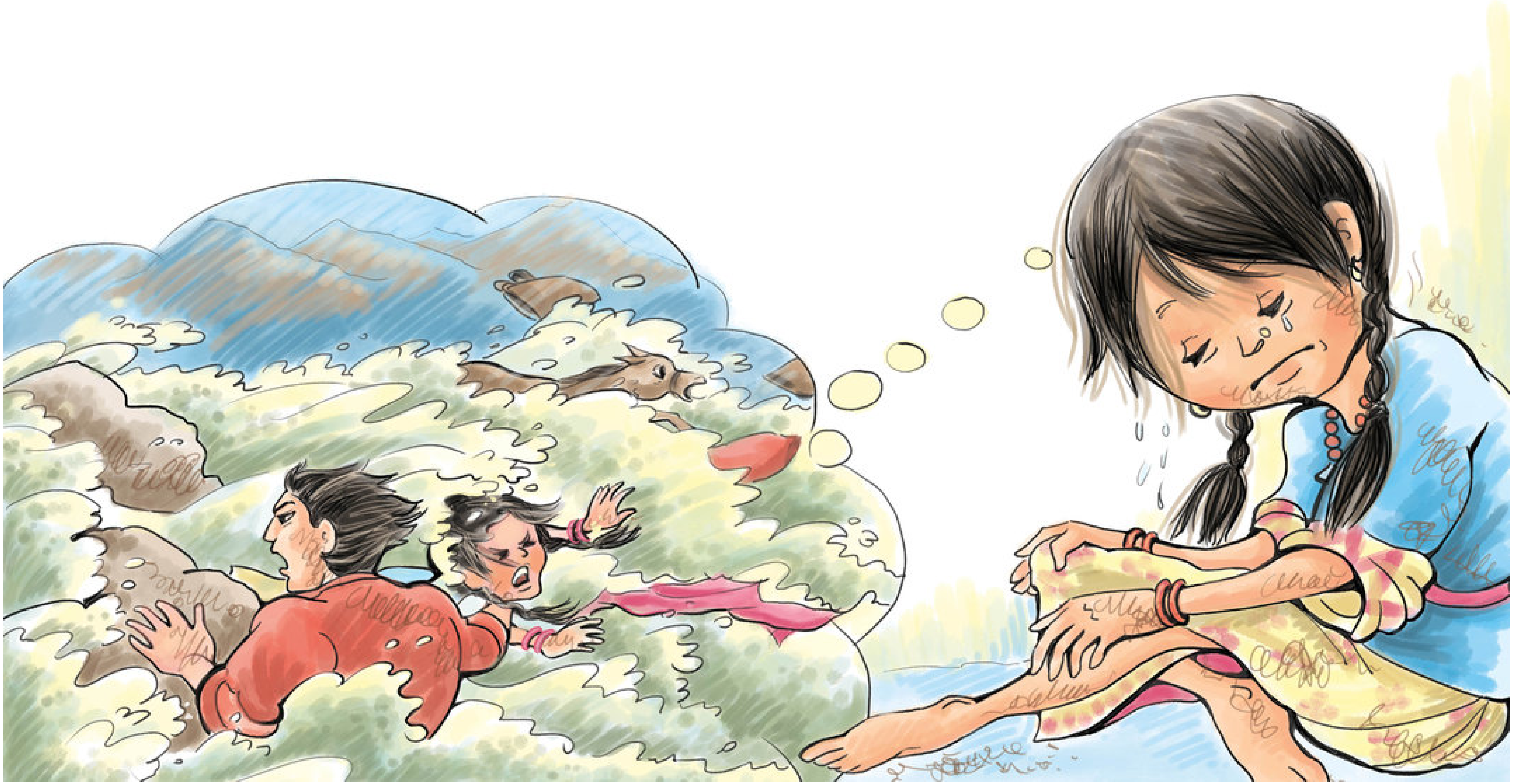
अड़ियल चट्टान से दिची का पैर छुड़ाने के लिए बिलकुल किसी पहलवान की तरह ज़ोर लगाते चाचा, बड़ी मुश्किल से अपने पैर जमाए थे। मटमैले पानी से सराबोर होने के बावजूद उन्होंने अपनी पूरी हिम्मत जुटा कर किसी तरह दिची को बाहर निकाला। उसे अपने मज़बूत कंधों पर डाल, सीधे उसकी माँ के पास पहुँचाया। निढाल सी पड़ी अपनी बेटी को देख-देख कर सुबकती रही उसकी माँ। दिची का बायाँ पैर दर्द से ऐसे फटा जा रहा था मानो हज़ारों सूइयाँ चुभ रही हों। उसे कँपकँपी छूटी जा रही थी, और फिर वह बेहोश हो गई।



दिची को उसकी घबराई हुई माँ के हवाले करके चाचा लौट पड़े दादा की तलाश में। लेकिन दादा घर नहीं लौटे। जब उनकी लाश को नदी से निकाल कर घर लाया गया तब दिची के दिल को डर के बेरहम पंजे ने जकड़ लिया।

दिची खेल का सामान बनाने वाली उस कंपनी के बारे में अच्छी तरह जानती थी जो क्रिकेट के बल्ले और खेल का दूसरा सामान बनाने के लिए चीड़, बाँज, देवदार और मोहिन के पेड़ काटते थे। ये लोग हमारे जंगलों को क्यों काटे डाल रहे हैं? क्या उन्हें दिखाई नहीं देता कि ऐसा करने से पहाड़ दरक जाते हैं, और उनका मलबा नीचे आ जाता है? उन्हें नहीं पता कि पहाड़ दरकने से अचानक बाढ़ आती है जो पहाड़ों पर रहने वाले बेबस लोगों को बहा ले जाती है? ऐसी ही बाढ़ में तो दादा... और दिची का बायाँ पैर चला गया। अब घुटनों से नीचे उसका पैर पूरी तरह सुन्न है।





क्या दिची नदी के उस बर्फ़ीले पानी को कभी भूल पाएगी? उसे अब भी लगता है वह बर्फ़ीला पानी उसके कानों में भरा जा रहा है, उसकी नाक में घुसा जा रहा है, उसकी आँखों को धुँधलाता हुआ उसके सिर के ऊपर सिमट कर उसे कभी उबरने नहीं देगा।

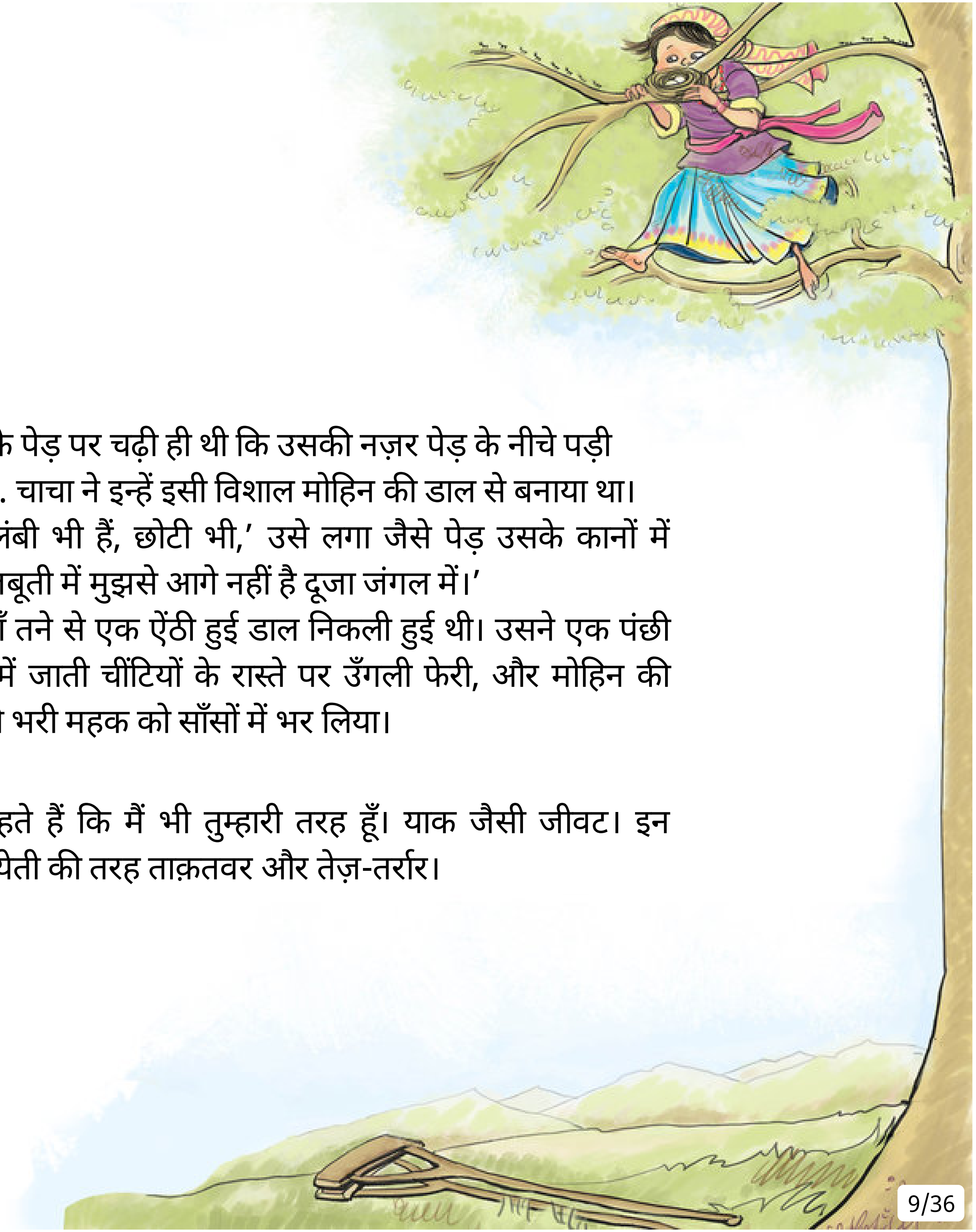


लेकिन, नहीं। चाचा कहते हैं कि उसे अच्छी चीज़ों के बारे में सोचना चाहिए... अच्छाइयों पर ध्यान देना चाहिए। इससे उसके अंदर हिम्मत जाग जाती है और एक ऐसा जोश पैदा होता है जिससे उसके सारे डर पिघल कर बह जाते हैं। फिर उसकी माँ और भाई भी तो हैं न। चाचा और चाची भी उन सब का ध्यान रखते हैं। उनके अपने बच्चे नहीं हैं।

दिची अपने चाचा को अपने पिता समान मानती है। लेकिन जब उसने चाची को माँ से कहते सुना, “आपका देवर भला आदमी है, लेकिन जो चीज़ मुझे परेशान करती है, वह है उसकी जुआ खेलने की आदत। यह एक ऐसी लत है जो किसी को बना-बिगाड़ सकती है, और हमारे हालात लगातार बिगड़ते जा रहे हैं...।”

चाचा, और जुआरी। अरे बाप रे! ऐसा कैसे हो सकता है! दिची भौंचक्की रह जाती है।

दिन बीतते रहे। दिची और उसके परिवार की ज़िंदगी नए ढर्रे पर चल पड़ी।



एक दिन दिची अपने पसंदीदा मोहिन के पेड़ पर चढ़ी ही थी कि उसकी नज़र पेड़ के नीचे पड़ी अपनी घर पर बनी बैसाखियों पर गई... चाचा ने इन्हें इसी विशाल मोहिन की डाल से बनाया था। 'मेरी डाल पतली हैं और मोटी भी, लंबी भी हैं, छोटी भी,' उसे लगा जैसे पेड़ उसके कानों में फुसफुसा कर कह रहा हो, 'लेकिन मज़बूती में मुझसे आगे नहीं है दूजा जंगल में।'
दिची और भी ऊँचाई पर चढ़ गई, जहाँ तने से एक ऐंठी हुई डाल निकली हुई थी। उसने एक पंछी के घोसले में झाँक कर देखा, क़तार में जाती चींटियों के रास्ते पर उँगली फेरी, और मोहिन की पत्तियों की ठंडक पहुँचाने वाली ताज़गी भरी महक को साँसों में भर लिया।

तुम मेरे हो मोहिन के पेड़। चाचा कहते हैं कि मैं भी तुम्हारी तरह हूँ। याक जैसी जीवट। इन बैसाखियों के सहारे तो मैं बन जाऊँगी येती की तरह ताक़तवर और तेज़-तर्रार।





“अरे दिची! सब लोग बैठक के लिए इकट्ठा हुए हैं!” श्याम ने ज़ोर की आवाज़ लगाई।
दिची बिजली सी फुर्ती के साथ पेड़ के तने के सहारे फिसलती हुई नीचे आई, और अपनी बैसाखियाँ उठाकर श्याम के पीछे-पीछे उस जगह की ओर चल पड़ी जहाँ गाँव वाले इकट्ठा थे। गाँव की बड़ी-बुज़ुर्ग, गौरी, एक बहुत बड़े और छायादार पेड़ के नीचे मिट्टी के छोटे से चबूतरे पर बैठी थीं।

“हम अनपढ़ सही, लेकिन समझदार लोग हैं,” गौरी ने कहा। “हम सरकार को अपने अनमोल पेड़ नीलामी में किसी कंपनी को नहीं देने देंगे। जब ठेकेदार चाँद कुल्हाड़ियों से लैस अपने लोगों के साथ आएगा, तो हम जंगल में पहुँच कर चीड़, देवदार और मोहिन के पेड़ों से लिपट जाएँगे। किसी तरह की हिंसा का सहारा नहीं लिया जाएगा।”

गाँव वालों की फ़ौज चिपको आंदोलन के नारे लगाते हुए जंगल में घुस गई। दिची ने अपनी ढोलक साथ ले ली ताकि वह रबर की गेंदों की तरह कुलाँचे भरते बच्चों के नारों की ताल के साथ ताल मिला कर धमाल कर सके।

***धूम धड़ाका! धूम धड़ाका!***
***धूम धड़ाका! धूम!***





“क्या हैं जंगल के उपकार?” दिची ज़ोर से पुकार लगाती।
“मिट्टी पानी और बयार। मिट्टी पानी और बयार, ज़िन्दा रहने के आधार॥”
उसके पीछे उछलते-कूदते चल रहे बच्चे एक स्वर में बोलते।



लेकिन कुल्हाड़ियों से लैस वर्दी पहने लोगों का दल उनके सामने था। भारी-भरकम क़द-काठी वाला ठेकेदार चाँद एक ऊँची सी जगह खड़ा उन्हें कड़क आवाज़ में एक-एक पेड़ पर बाक़ायदा खड़िया के घोल से काटने का निशान लगाने को कह रहा था।

गुस्से से बौखलाए गाँव वालों में अफ़रा-तफ़री मची थी। पेड़ काटने के लिए आए दल पर हावी होने की कोशिश में वह उन्हें दिखा-दिखा कर अपने ढोल पीटते हुए चिपको आंदोलन के नारे लगा रहे थे।

“लिपट जाओ पेड़ों से, कटने से इन्हें बचा लो; अपने पहाड़ की है ये दौलत, लुटने से इन्हें बचा लो।”



**धूम धड़ाका! धूम धड़ाका!**
**धूम धड़ाका! धूम!**

लेकिन गाँव वालों की नारेबाज़ी का ठेकेदार चाँद पर कोई असर नहीं था। जब कुल्हाड़ियों से लैस उसके आदमी बस में बैठकर वहाँ से जा रहे थे, तब भी वह दाँत दिखाते हुए दुष्टता भरी हँसी हँस रहा था।

अगले दिन कुछ ज़्यादा ही चहल-पहल मची थी, क्योंकि गाँव के मर्द जाने की तैयारी कर रहे थे। दूर घाटी में सरकार की तरफ़ से एक फ़िल्म दिखाई जा रही थी। मर्दों को लेने के लिए ट्रक भेजे गए थे- उन्हें अचानक ऐसा बढ़िया मौका मिला था जिसे यूँ ही नहीं गँवाया जा सकता था, क्योंकि इस इलाके में फ़िल्म देखने के मौक़े कम ही मिलते थे।

औरतें करघों पर बुनाई और घरेलू कामकाज में उलझी थीं। गाँव के स्कूल में अलग हलचल थी। बच्चे स्लेट पर चीड़, देवदार और मोहिन जैसे पेड़ बना रहे थे, चिपको आंदोलन के नए-नए नारे रट रहे थे; ढोलक बजाना और नाचना सीख रहे थे।

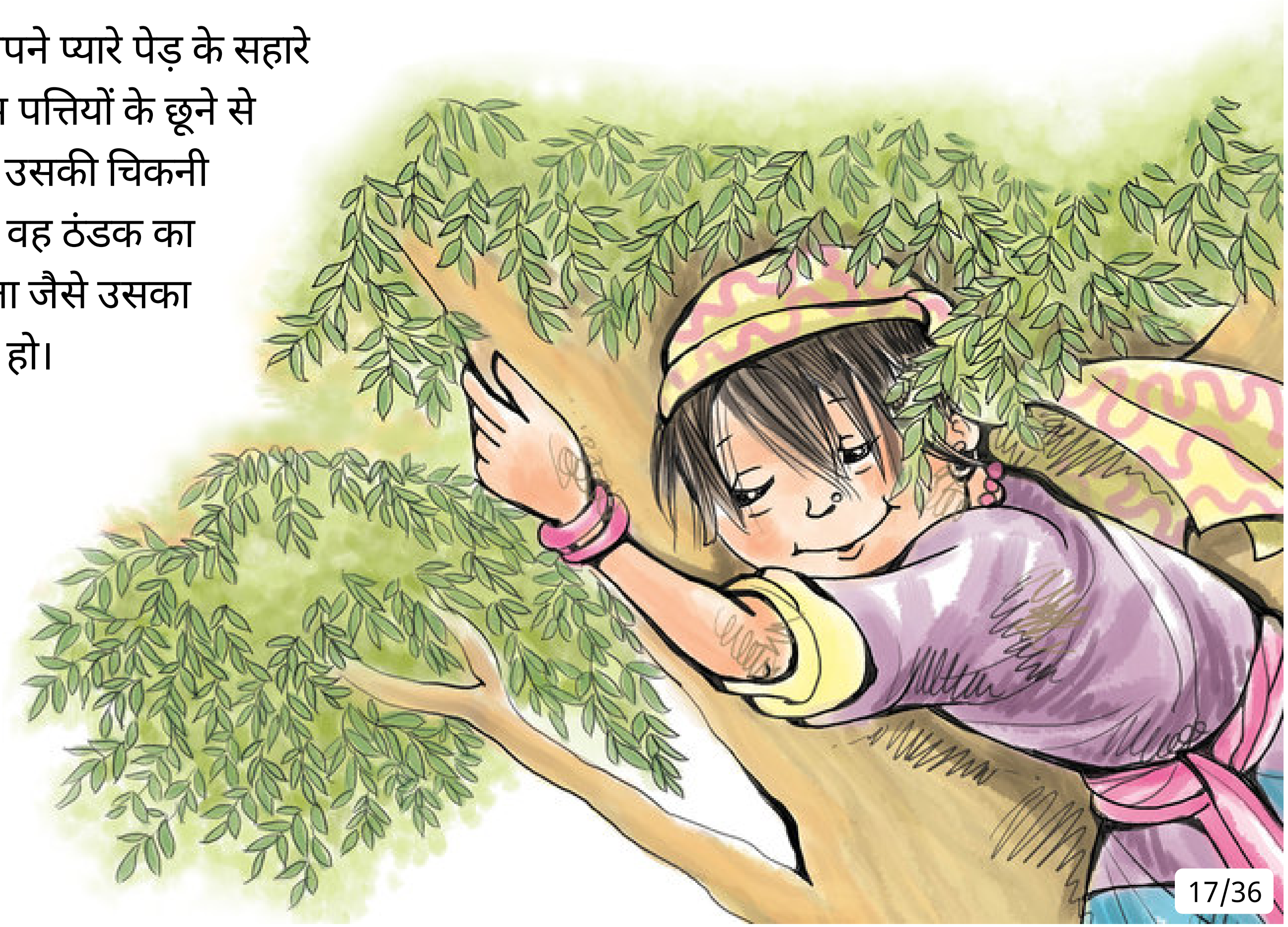
“धरती अपनी, पानी अपना,
ये जंगल अपनी ही विरासत पुरखों ने हमारे पोसा इन्हें,
करनी है हमें इनकी हिफ़ाज़त।”

***धूम धड़ाका! धूम धड़ाका!***
***धूम धड़ाका! धूम!***

“आओ, कटने से बचाएँ पेड़ और नई पौध लगाएँ कुल्हाड़ी वाले
लुटेरे भगाने की अलख जगाएँ।”

स्कूल की छुट्टी होने के बाद दिची और उसके भाई भेड़ों को जंगल में चराने के लिए ले जाते थे। गाँव के दूसरे बच्चों के साथ वह भी चीड़, देवदार, मोहिन वग़ैरह के पेड़ों से लिपट जाते थे। जब सूरज डूबने को आता, तब कहीं उनकी जोश भरी आवाज़ें हल्की पड़तीं, और बच्चे सिर पर जलावनी लकड़ी के गट्ठर उठाए अपने घरों की राह पकड़ते थे।

दिची ने अपनी आँखें मूँदीं और अपने प्यारे पेड़ के सहारे खड़ी हो गई। उसकी नर्म-मुलायम पत्तियों के छूने से दिची को बड़ी शांति मिलती, और उसकी चिकनी छाल से अपने गालों को लगा कर वह ठंडक का एहसास कराती। उसे महसूस होता जैसे उसका पेड़ उसके कानों में कुछ कह रहा हो।



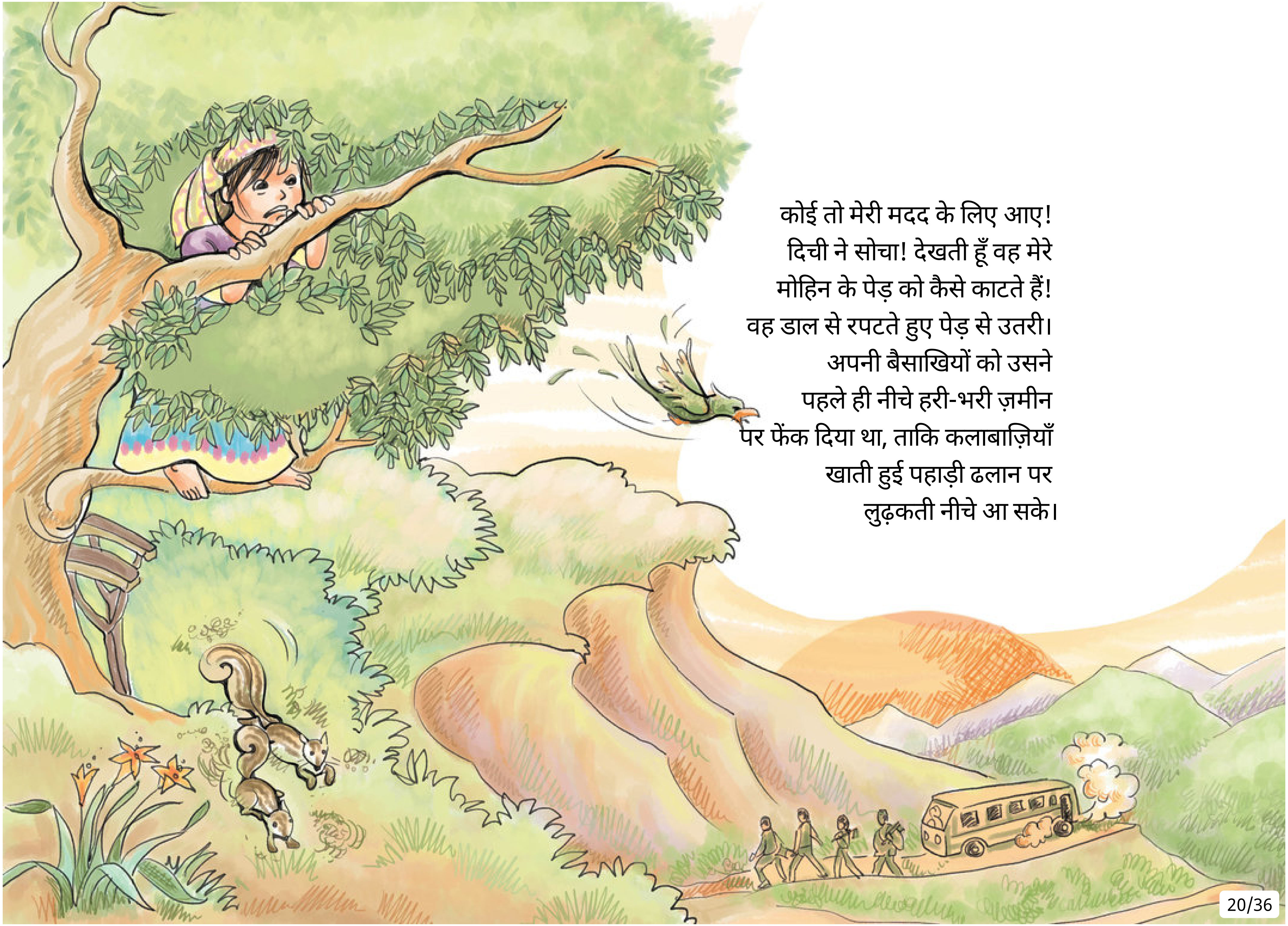


‘मेरा मोहिन का पेड़ मुझसे जुदा न हो’
वक़्त थम सा गया था।
जैसे सारे जहाँ में सब कुछ ठीक चल रहा हो।

लेकिन शांति में डूबे पेड़ों के बीच अचानक हलचल मच गई। उनके कलेजे में बनाए घोसलों से निकल-निकल कर चीखते हुए तोते अपने हरे-हरे पंख फड़फड़ाते वहाँ से उड़ कर जाने लगे। पेड़ों के नीचे उगी हरियाली में फुदकती गिलहरियों में अफ़रा-तफ़री मच गई- जब चिंचियाते हुए ब्रेक लगने के साथ एक बस बड़ी चट्टान की आड़ में आकर रुकी। कीचड़ से सनी बस रुकते ही गर्द के गुबार से घिर गई। पत्तों की आड़ से दिची ने झाँक कर देखा।

एक के बाद एक बस से निकले आदमी क़तार बनाकर आगे बढ़ रहे थे। उनकी ख़ाकी वर्दियाँ मुसी हुई थीं, और जब वह चीड़, देवदार और मोहिन वग़ैरह के पेड़ों की ओर बढ़ रहे थे तो उनकी कुल्हाड़ियों के फल चमचमा रहे थे। आख़िर में निकला भारी-भरकम डीलडौल वाला चाँद ठेकेदार भालू की सी चाल में आगे बढ़ा। इन लोगों के क़दमों की आवाज़ घाटी में गूँज रही थी।





कोई तो मेरी मदद के लिए आए!
दिची ने सोचा! देखती हूँ वह मेरे
मोहिन के पेड़ को कैसे काटते हैं!
वह डाल से रपटते हुए पेड़ से उतरी।
अपनी बैसाखियों को उसने
पहले ही नीचे हरी-भरी ज़मीन
पर फेंक दिया था, ताकि कलाबाज़ियाँ
खाती हुई पहाड़ी ढलान पर
लुढ़कती नीचे आ सके।



धड़धड़, धड़धड़, धडाक!
धड़धड़, धड़धड़, धडाक!
दिची का दिल भी ढोलक की तरह धड़क रहा था।

***धूम धड़ाका! धूम धड़ाका!***
***धूम धड़ाका! धूम!***

'मुझे मदद की है दरकार!' दिची ने इधर-उधर देखा, फिर हाथ बढ़ाकर बैसाखियों को बाँहों के नीचे दबाए खट-खट करती घर की ओर तेज़ी से चल पड़ी!

"माँ!" घर पहुँचते ही उसने हाँफते हुए पुकारा।

माँ तेज़ी से बाहर आई और दिची को अपनी बाँहों में थाम लिया। दिची होली की आग में फुँकी लकड़ी की तरह माँ की बाँहों में ढह गई।

“माँ, मेरा मोहिन का पेड़। वो...वो...वो लोग उसे काट रहे हैं!”

“कौन, मेरी बच्ची? ठीक से बता। ले, यह पानी पी ले।”

“वे लोग, माँ! जो बड़ी सी बस में कुल्हाड़ियाँ लेकर आए हैं! धारदार कुल्हाड़ियों से लैस हट्टे-कट्टे आदमी, माँ!”

“अरे, बाप रे! ठेकेदार के आदमी आ गए हैं हमारे पेड़ काटने के लिए! जल्दी! कुछ तो करो!”

“तुम यहाँ ठहरो, माँ। मैं सब को इकट्ठा करती हूँ,” हाँफते-हाँफते अपना सीना तान कर दिची ने कहा।

जल्दी ही औरतें और बच्चे गर्दन में ढोलक डाल घरों से बाहर आकर एक जगह जमा हो गए।

“हमें कुछ करना होगा। इस ठेकेदार चाँद ने ऐसी चाल चली कि हमारे मर्द यहाँ से चले जाएँ!” माँ ने अपने फंतू का सिरा उंगली पर लपेटते हुए कहा। “बिना मर्दों के हम उन्हें रोकेंगे कैसे?”

“हम उन्हें दिखा देंगे कि हम कौन हैं! लेकिन ध्यान रहे कि ख़ून-ख़राबा बिलकुल नहीं होना चाहिए,” माँ की सबसे पक्की सहेली गाँव की बुज़ुर्ग गौरी ताई ने कहा।

दिची का दिल ढोलक की हर थाप पर उछल-उछल जा रहा था।

***धूम धड़ाका! धूम धड़ाका!***
***धूम धड़ाका! धूम!***

'चिपको!' वह ज़ोर से चिल्लाई।
"पेड़ों से लिपट जाओ!" औरतें और बच्चे भी पेड़ों से लिपट चिल्ला-चिल्ला कर नारे लगाने लगे। सब इतना चिल्लाए कि गले में दर्द होने लगा और उन्हें गर्मागर्म मक्खन वाली चाय की ज़रूरत महसूस होने लगी।



चीड़, देवदार, मोहिन और दूसरे पेड़ों के सुबकने की आवाज़ें जंगल का सन्नाटा चीर गईं।

“क्या हैं जंगल के उपकार?” दिची ने आवाज़ लगाई।

“मिट्टी, पानी, और बयार!” औरतों और बच्चों ने जवाबी पुकार लगाई। जिस-जिस पेड़ को काटा जाना था, उसकी छाल को गहरा खरोंच कर निशान बनाए गए थे। ऐसे घाव जो कभी भरने वाले नहीं थे। ‘मेरा मोहिन! तुम्हारे बिना मैं कैसे रहूँगी?’ दिची कँप कँपाती उँगलियों से पेड़ पर बने उस निशान को मिटाने की कोशिश करती रही।
“तुम मेरे मोहिन को नहीं काट सकते,” उसने सख़्ती के साथ कहा, और अपनी बाँहों से अपने पेड़ के तने को घेर लिया।

“हट जा!” ठेकेदार चाँद उसे झटके से दूर हटाते हुए गरजा।

दिची ने पलट कर ज़मीन पर पैर पटका। बाज सी नज़रों से वह कुल्हाड़ी थामे उन आदमियों को ग़ौर से देख रही थी, जिन्होंने उसके चारों ओर घेरा सा बना रखा था। वह थके-हारे से लग रहे थे। जैसे ही उसने एक पेड़ की आड़ में छुपने की कोशिश कर रहे एक आदमी को घूर कर देखा, उसने आँखें नीची कर लीं।

दिची की आँखें फैली रह गईं, “चाचा, तुम भी?”



जंगल में सन्नाटा सा छा गया। चाचा की पकड़ ढीली पड़ गई, और उनके हाथ से छूट कर कुल्हाड़ी खन्न की आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिरी।

“जुए में हारने की वजह से मेरे ऊपर कर्ज़ चढ़ गया है। ऊपर से काम छूट गया है...” चाचा ने खोखली सी दलील दी।

दिची और उसके भाई दौड़कर उनके पास पहुँचे और उनसे लिपट गए।

“चाचा, हम काम करेंगे और आपके कर्ज़ उतारने में मदद करेंगे! मैं शॉल बुनूँगी और उसे बेच कर पैसे कमाऊँगी!” दिची बोली।

“मैं साबुन के कारखाने में काम करूँगा,” राम ने कहा।

“मैं पनचक्की पर काम करके पैसे कमाऊँगा!” श्याम बोला।
चाचा का सिर झुक गया, और उनकी आँखें भर आईं। उन्होंने अपनी वर्दी वाली क़मीज़ उतार कर फेंक दी और दिची की ढोलक उठा ली।

***धूम धड़ाका! धूम धड़ाका!***
***धूम धड़ाका! धूम!***



“क्या हैं जंगल के उपकार?” चाचा ने दिची के साथ मिलकर पुकारा।

“मिट्टी, पानी, और बयार!” औरतों और बच्चों ने मिलकर जवाबी पुकार लगाई।

“बेवकूफ़ लड़की! इन जंगलों में इमारती लकड़ी, राल-रेज़िन मिलता है, जिसके बदले विदेशों से आता है धन! जवानों! फ़ौरन काट डालो इन पेड़ों को!” ठेकेदार चाँद ने सब की बात काट अपनी बात कह डाली। “इन तमाम पेड़ों को- चीड़, देवदार, मोहिन वग़ैरह!”

“नहीं, नहीं, नहीं! मत काटो!” अपने पेड़ से लिपटी दिची बोल उठी।

“ठीक कहती है यह।” चाचा बोल पड़े, “बाढ़ ने इसके दादा को छीन लिया था।”

एक और आदमी ने कुल्हाड़ी ज़मीन पर गिरा दी। फिर दूसरे ने छोड़ी। एक-एक कर के सारे आदमी कुल्हाड़ियाँ चलाने के बजाय वहाँ से चल दिए।

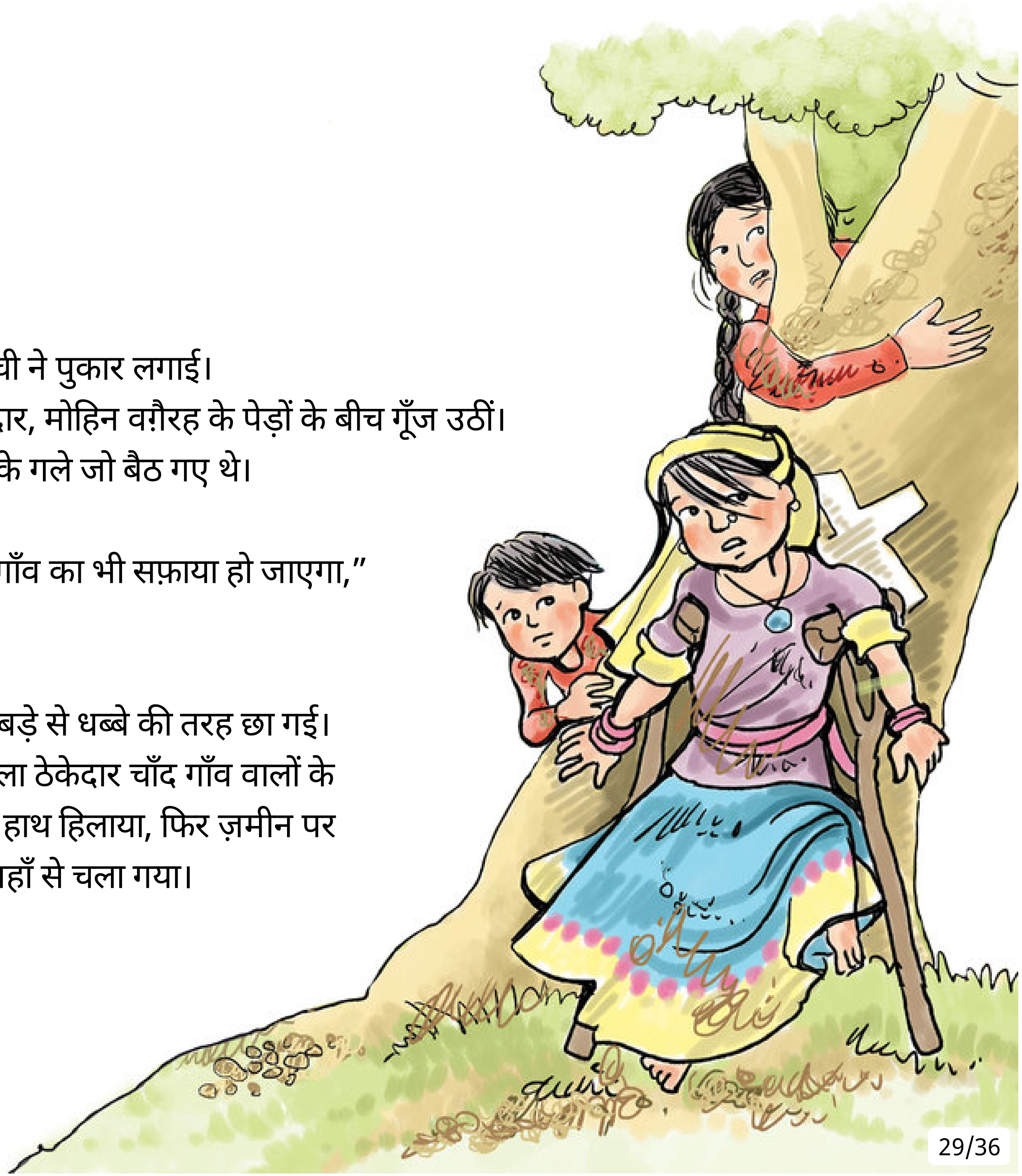


***धूम धड़ाका! धूम धड़ाका!***
***धूम धड़ाका! धूम!***

“चिपको! पेड़ों से लिपट जाओ!” दिची ने पुकार लगाई।
दूसरे लोगों की आवाज़ें भी चीड़, देवदार, मोहिन वग़ैरह के पेड़ों के बीच गूँज उठीं।
भारी सी आवाज़ें। नारे लगाने से सब के गले जो बैठ गए थे।

“अगर यह जंगल कट गया तो हमारे गाँव का भी सफ़ाया हो जाएगा,”
माँ बोलीं।

एक बड़ी सी चीज़ आसमान के आगे बड़े से धब्बे की तरह छा गई।
बिजली जैसा तेज़, पहाड़ से शरीर वाला ठेकेदार चाँद गाँव वालों के
सामने आया। गुस्से से मुट्ठी बाँधकर हाथ हिलाया, फिर ज़मीन पर
पैर पटकता हुआ वह तेज़ क़दमों से वहाँ से चला गया।





दिची ने दोनों हाथों को एक-दूसरे में कस कर भींचा और एक गहरी साँस ली। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि कुल्हाड़ियाँ लेकर आने वाले आदमी चले गए थे!

“हम कामयाब रहे!” माँ बोलीं। “हम अपना चिपको आंदोलन भारत के हर हिस्से में ले जाएँगे।” “चिपको! पेड़ों से लिपट जाओ!” औरतों और बच्चों ने मिलकर आवाज़ लगाई। लोगों के पैर थिरक उठे, तलवों से ताल देने लगे। बाँहों में बाँहें डाल, जीत की ख़ुशी में झूम उठे।

मोहिन का पेड़ हवा में झूमने लगा। दिची ने अपना गाल उसकी शीतल छाल पर टिका दिया। शाम की ठंडी हवा में लहराती-सरसराती मोहिन की मख़मली पत्तियाँ उसके गालों को सहलाने लगीं।

“मैं भी तुम्हारी तरह हूँ दमदार और जानदार... येती की तरह...
और याक की तरह भरोसेमंद।”







## कुछ नए शब्द

**फंतू** - एक प्रकार का शॉल जिसे भोटिया औरतें अपने सिर पर इस तरह से बाँधती हैं कि दो जेबें सी बन जाती हैं।

**याक** - ऊँचे पहाड़ों पर पाए जाने वाले, लम्बे रुओं वाले पालतू पशु।

**येती** - एक काल्पनिक भीमकाय वनमानुष। धारणा है कि येती नेपाल और तिब्बत के हिमालय पर्वतों पर रहते हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ** ऐसी छपी हुई पुस्तकों या सामग्री की सूची होती है जिसका उपयोग लेखक ने इस कहानी को लिखने में किया है। इस कहानी के सन्दर्भ ग्रन्थ यहाँ दिए गए हैं :


१. रामचन्द्र गुहा की पुस्तक - अनक्वायट वुड्स
२. मार्क शेपर्ड की पुस्तक - चण्डी प्रसाद भट्ट, गौरा देवी एण्ड द चिपको मूवमेंट
३. ई.सी.एम. ब्राउन की पुस्तक - अमंग द भोटियाज़ एण्ड देअर नेबर्स
४.http://www.youtube.com/watch?v=tcwY04s_mlM&feature=related - CNN IBN –Chandi Prasad Bhatt
५. http://www.youtube.com/watch?v=GXnAcTS8Ais&feature=related Nanda Devi Campaign: Bali Devi Speaks

जंगल के रखरखाव का मतलब सिर्फ़ पेड़ों को बचाने से नहीं है। इससे लोगों का ही भला होता है।
—***जैक वेस्टबी, द परपज़ ऑफ़ फॉरेस्ट्स*** के लेखक

• भोटिया जनजाति के लोग हिमालय पर्वत की ज़्यादा ऊँचाई वाले इलाकों में रहते हैं। इन लोगों को जंगलों से गहरा लगाव है। ये उनकी रक्षा करते हैं क्योंकि औज़ार बनाने के साथ इमारती और जलावनी लकड़ी के लिए ये लोग जंगलों के भरोसे रहते हैं।

• १९७० में जब बड़े पैमाने पर जंगल कटे थे, तब अलकनंदा में भयानक बाढ़ आई थी जिसमें मकान, पुल, मवेशी और हज़ारों लोग बह गए थे। भोटिया लोग समझ गए थे कि अपने भविष्य की ख़ातिर उन्हें इलाके के जंगलों को बचाना ही होगा, और इसीलिए उन्होंने अहिंसा के रास्ते को अपनाते हुए चिपको आंदोलन चलाया। हालाँकि वह ख़ुद पढ़ी-लिखी नहीं हैं, लेकिन चमोली की रहने वाली गौरा देवी अपने इलाके की महिलाओं को प्राकृतिक संपदा की रक्षा करने के लिए एकजुट करती हैं। कुछ लोग इसे नारीवादी-पर्यावरण आंदोलन मानते हैं क्योंकि इसमें महिलाओं की भागीदारी बढ़-चढ़ कर रहती है।

• उत्तराखण्ड की अलकनंदा घाटी में चंडी प्रसाद भट्ट एक सीधे-सादे सामाजिक कार्यकर्ता हैं जो लोगों को पेड़ों से लिपट कर उन्हें कटने से बचाने की सीख देते हैं। महात्मा गाँधी की तरह उन्होंने भी अहिंसा का रास्ता अपनाया है। वह आदिवासियों को वन-संपदा को नुकसान पहुँचाए बिना अपने काम-धंधे चलाने के लिए प्रेरित करते हैं।

• “पर्यावरण की अपनी स्थायी अर्थव्यवस्था है-” यह कहना है चिपको आंदोलन के नेता सुंदरलाल बहुगुणा का, जिन्होंने जंगलों की कटाई रोकने के लिए आंदोलन चला रखा है।



• इस कहानी की दिची की तरह, एक छोटी सी भोटिया लड़की ने सचमुच पेड़ों को काटने आए लोगों को देख लिया और गाँव की महिलाओं को ख़बर कर दी थी। वे इकट्ठी होकर चिपको आंदोलन के नारे लगाते हुए जंगल में घुस गई थीं। बिना हिंसा का सहारा लिए उन्होंने जंगल का सफ़ाया करने आए लोगों को रोक दिया, और ढाई हज़ार पेड़ों को आरी-कुल्हाड़ी की भेंट चढ़ने से बचा लिया था।

• १९८० में, सरकार ने जंगलों को बचाने के लिए क़ानून बना दिया। यह आंदोलन पर्यावरण के क्षेत्र में भारत का पहला बड़ा आंदोलन था।

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

## Story Attribution:

This story: चिपको चिपको वृक्ष बचाओ is translated by Rishi Mathur . The © for this translation lies with Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Chipko takes root', by Jeyanthi Manokaran . © Pratham Books , 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

## Other Credits:

'Chipko Chipko Vriksh Bachao' has been published on StoryWeaver by Pratham Books. The development of this book has been supported by HDFC Asset Management Company Limited- a joint Venture with Standard Life Investments. www.prathambooks.org

## Images Attributions:

Cover page: Girl on crutches playing the dholak and dancing , by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: A girl hanging upside down from a tree with her friends, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: A girl crossing a river towards a boy standing in the river, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: A girl crossing a river in a village situated in the hills, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Two people trapped in a whirlpool, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: A girl crying alone in the corner, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: A girl crying while thinking about two people who have drowned in the river, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: A girl crying with an angry old woman in the background with another woman, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: A girl standing on a tree branch with a firm grip, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: A girl crying due to her family and later standing on a tree branch, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

CC BY

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

## Images Attributions:

Page 11: People heading towards a village meeting, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Girl playing a song on her drum and singing , by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Girl on crutches playing and singing a song with her dholak, with other children dancing behind her, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Men in uniforms wielding axes and marking trees to be cut, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Passionate group of villagers singing and playing on drums, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Girl hugging a tree branch and smiling, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Girl hugging a tree branch with her village in the backdrop, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: Soldiers walking on the road with a bus coming behind them, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: Girl on top of a tree looking at soldiers walking on the road fearfully, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: A girl on crutches throwing herself on a woman, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 23: A woman's hands holding a dholak, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 25: A bunch of children scared of a man holding an axe and crying, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

PRATHAM BOOKS
storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 26: Backdrop of trees, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 27: Man playing a dholak passionately with children and women joining him , by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 28: Men throwing away their axes on the ground, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 29: Children hugging a tree protectively, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 30: Villagers hugging trees of the forest with uniformed men giving up their axes, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 31: Rural women dancing in a circle, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 32: Rural women dancing in a forest with joy, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 33: A stalk of leaves , by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 34: A stalk of leaves in the corner, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 36: Girl hugging a tree in a forest, by Jeyanthi Manokaran © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

# चिपको चिपको वृक्ष बचाओ

(Hindi)

ऊँचे पहाड़ों की यह कहानी बतलाती है कि हौंसला हो तो क्या कुछ नहीं हो सकता। एक भोटिया लड़की दिची, अपने प्यारे पेड़ों को बचाने के लिए चिपको आंदोलन का सहारा लेती है। उनके गाँव में हर कोई जानता है कि जीवन की सब ज़रूरी चीज़ें पेड़ों से आती हैं। अलकनन्दा नदी के हिमालय क्षेत्र में पेड़ों के भारी कटाव से १९७० के दशक में बहुत बा़ढ आई। इसने पेड़ों से लिपट कर उन्हें काटने से बचाने के आंदोलन को जन्म दिया। इस दिल को छू लेने वाली कहानी को पढ़िए और देखिए कि एकता की ताकत क्या होती है।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

PRATHAM BOOKS

storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India  and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!